रिकाडिः-मुरवडा देरव ले प ,ाषिः ..   ओम शान्तिः   प्रातः क्लास   25-5-67

बच्चे जब बेठते है सुनते है तो अपने को आत्मा निश्चय कर बैठे और यह निश्चय करें कि परमात्मा बाप हमको पढा रहे है।यह सब डायैरेक्शन अथवा मत एक ही बाप देते है। उसके सही श्रीमत कहा जाता है। श्री अर्थात श्रेष्टते श्रेष्ट। वो है बेहद का बाप जिनको ही ऊँच मे ऊँच भगवान कहा जाता है।बहुत है जो उस लव से परमात्मा को बाप समझते ही नही है। भल शिव के भक्त है बहुत जाकर प्यार भी करते है। परन्तु आज कल के सन्यासियों नें कह दिया है कि परमात्मा भित्तर-ठिक्कर मे है तो फिर वो भी लव किसमे रखें।इसलिय ही बाप से विप्रीत बुधी हो गये है। भक्ति मार्ग में जबकोई दुःख वा रोग आद होता है तो प्रीत दिखाते है। कहते है हे भगवान रक्षा करो। साथ-2 मे फिर ग्लानी भी करते है कि परमात्मा ठिक्करभित्तर सब मे है। बच्चे जानते है गीता है श्रीमत भगवान के मुख सें गाई हुई। और कोई ऐसा शास्त्र नही है जो भगवान दवारा गाया गया हो वा उसमे श्रीमत दी हो। एक ही भारत की गीता है जिसका ही इतना प्रभाव भी है।एक गीता ही भगवान की गाई हुई है। उनका ही प्रभाव है। निराकार भगवन तरफ ही दृष्टी जाती है। ऊंगली से ईशारा ऊपर मे करेंगें। कृष्ण के लिय ऐसे नही कहेंगें क्योकि वो तो देहधारी है नां।नीचे रहने वाला है। तुमको अब उनके साथ सम्बन्ध का पता पडा है। इसलिये कहा जाता है कि बाप को याद करो। उनेसे ही प्रीत रखो। आत्मा अपेन बाप को याद करती है। अभी वो भगवान बच्चो को पढा रेह है तो नशा बहुत चढ़ना चाहिय और बहुत जल्दी चढ़ना चाहिये। ऐसे नही कि ब्राह्मणी सामेन हो तो नशा चढ़ा रेह ब्राह्मणी सामेन नही तो नशा उड जावे।बस ब्राह्मणी बिना तो हम क्लास ही नही कर सकते है।बाबा कोई-2 सेन्टर्स के लिय समझाते है कि कही सें तो ब्राह्मणी 5,6 मास भी बाहर निकल जाती है तो अपने आप क्लास सम्भालते रहते है। क्योकि पढाई तो साधारन है। कोई तो ब्राह्मणी बिना जैसे कि अन्धे लूले हो जाते है। ब्राह्मणीनिकल आई तो सेन्टर पर जाना छोड देगें। अरे बहुत बेठे है क्या क्लास नही चला सकते? गुरु बाहर मे चला जाता है तो उसके चेले पिछाडी मे सम्भालते है ना। यहाँ तो ब्राह्मणी बिना जैसे कि अन्धे बन जाते है। अभी तो तुम अन्धे से सजा बन रहे हो तो ऐसे थोडेही होना चाहिये। बाबा समझाते है कि धारना नही होती तो सेन्टर नही सम्भाल सकेंगे। ठण्डे पड जाते है। बच्चो को तो सर्विस करनी है।स्टुडण्टस मे नम्बरवार तो होते ही है। बाबा जानते है कि कहाँ पर फर्स्ट क्लास को भेजना है कही पर थर्ड क्लास को भेजना है।इतने वर्ष सीखे है तो कुछ तो धारना हुई होगी जो सेन्टर को चलावे आपस मे मिले। मुरली तो मिलती ही है। पुआईन्टस के आधार पर ही समझाते है। सुनने की टेव पडी है फिर सुनानी की टेव पडी नही है। याद मे रेह तो धारना भी हो।सेन्टर पर ऐसी तो कोई होनी चाहिय नां जो कहें कि अच्छा ब्राह्मणी जाती है तो हम सम्भालेंगें। बाबा ने ब्राह्मणी को कही अच्छे सेन्टर पर भेजा है सर्विस करने लिये। तो ब्राह्मणी बिना मूंझ नही जाना चाहिये। ब्राह्मणी जैसे नही बनेंगें तो दुसरो को आपसमान कैसे बनावेंगें।मुरली तो सबको ही मिलती है। बच्चो को खुशी होनी चाहिये।ग्रीम गदी पर बेठ कर समझावे। हर एक प्रक्टिस करने पर ही तो सर्विबुल बन सकते है नां। बाबा पूछते है कि सर्विस बुल बने हो।तो कोई भी नही निकालते है।तो कोई भी नही निकलते है। सर्विस पर जाने लिय तो झूठ मुठ की बिमारी का भी सार्टीफिकेट ले लेते है। यह तो बच्चों को मालूम हैकि हम सब बिमार है। अभी तुम आधा कल्प के लिये तंदरूसत बन रेह है। तो भी सर्विस के लिये बुलावा हो तो झट चले जाना चाहिये। बाबा कोशिश भी कर रेह है कि जो बन्धन मुक्त है तो नौकरी भी छुडवा देंगे। उस गवर्मेन्ट से तो इस गवर्मेन्ट की यह पढाई बहुत ऊंची है। भगवान पढाते हैजिससे ही तुम 21जन्मो के लिय वैकुण्ठ का मालिक बनते हो। कितनी भारी आमदनी है।उस कमाई से क्या मिलेगा? अल्प काल का सुख। यहाँ पर तो विश्व का मालिक बनते हो।जिनको तो पक्का निश्चय है वो तो कहेंगें कि हम ... नौकरी को क्या करेंगे। परन्तु पूरा नशा चाहिये। ... है कि ...

25-5-67 OK

किसीको समझा सकते है? है तो बहुत सहज। समझाना है कि कलयुग अन्त मे 500 करोड मनुष्य है सतयुग मैं जरुर फिर थोडे ही होगें। उसकी स्थापना के लिये बाप जरुर संगम पर ही आवेगें। पुरानी दुनियाँ का विनाश होना है। महाभारत की लडाई भी मशहूर है। यह लगती ही तब है जबकि भगवान आकर संगम पर राजयोग सिखा कर राजाओं का राजा बनाते है नां तो। कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कराते है। कहते है देह सहित देह के सब धर्म छोड कर मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होगें। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना इसमे ही मेहनत है। योग का अर्थ एक भी मनुष्य नही जानते है। सन्यासियों ने तो अनेक प्रकार के मनोमय योग बैठ कर बनाये है। भक्ति मार्ग की है सब मनोमय बाते। कहते है यह शास्त्र वेद व्यास भगवान ने बैठ कर बनाये है। बाप समझाते है कि यह सब ड्रामा मैं नूंध है जो भक्ति मार्ग मैं बैठ बनाते है। बाकी व्यास कोई भगवान होता ही नही है। जब-2 भक्ति शुरु होती है तो यह शास्त्र आद बनतेजाते है। दुर्गति मे जाने लिये। क्योकि यह सब है मनोमय। इसमे कोई फायदा नही। नुकसान ही नुकसान है। जन्मजन्मान्तर झूठी गीता पढ़ते आये है। झूठी और सच्ची गीता मे रात-दिन का फर्क है। बाप की बायोग्राफी मे बच्चे का नाम डाल देते है। बाप की जीवन कहानी है बिलकुल अलग। वो पुर्नजन्म रहित और वो बच्चा जो कि पुरे 84जन्म लेता है उसका नाम डाल दिया है। मनुष्यों को उल्टा सुना कर और ही फायदे के बदले नुकसान कर देते है। यह शास्त्र भी बनने है। भक्ति मार्ग चलना ही है। खेल बना हुआ है ज्ञान भक्ति और वैराग। वैराग भी दो प्रकार का होता है। सन्यासी लोग घर बार छोड कर जाते है जब कि सतोगुणी थे। अभी तो तमोप्रधान होनके कारण वेगर लाईफ को छोड कर रायल लाईफ मे आ गये है। बडे-2 फ्लैटस मोटर्स है। परन्तु मनुष्य भी इतने पत्थर बुधी है तब भी समझते है कि इन्होने घर बार को छोडा है। सब इनके चरणों मैं झुकते रहते है। यह नहीं समझते है कि यह तो तमोप्रधान है। गवर्मेन्ट के भी गुरु बन बैठे है। नन्दा, बाबू हेड बन कर बैठा है। मनुष्यों को तो फिर गुरुओं का हेड बनना नही चाहिये। परन्तु आजकल मान तो सब चाहते है नां। बाप समझाते है कि बिलकुल ही रैप बुधी है। भक्ति मार्ग मैं सबसे रैप्स बुधी वो है जो बहुत वेद शास्त्र आद पढ़ते है। एक ही बात मे तमोप्रधान बन जाते है बाप को सर्वव्यापी कह देते है। भारतवासियों को बाप से बिलकुल ही बेमुख विप्रीत बुधी कर दिया है। परन्तु बुधी होती तो गाली थोडेई देते। बाप कहते है सबोस जास्ती तो मेरे को गाली देते है। श्रीकृष्ण को राम को कितनी गाली देते है। यह सब बाते बाप ही आकर समझाते है। भक्त है ही वैशाल्य मे रहने वाले। तुम बच्चे जानते हो कि हम अब शिवाल्य मे जा रहे है। तुम सभी ब्र, कु, कु भाई-बहन हो। विकारी दृष्टी जा नहीं सकती। आज कल तो बच्ची पर बाप, भाई बहन पर, गुरु शिष्य पर क्रिमनलएसाल्ट करते रहते है। तमोप्रधान है नां। साधु सन्त आद भी गन्दे काम करते रहते है। बडे-2 आदमियों के लिये तो खास वैशाल्य रहते है। इनका नाम ही है वैशाल्य नर्क। परन्तु अपने को नर्कवासी समझते थोडेई है। स्वर्ग का पता ही नही तो कह देते है कि स्वर्गनर्क यहाँ ही है। कितनी भी स्त्रियाँ रखे तो उसमे क्या है। यह गन्दे संस्कार क्यो पडे? क्योकि समझते है कि कृष्ण को बहुत रानियाँ थी। (निजाम का मिसाल) बोलो हिन्दुओं के भगवान कृष्ण ने 1600रानियाँ रखी हमने 500 रख ली तो क्या हो गया। शास्त्रो से कितना गन्द उठाया है। जैसे अभी-2 शंकराचार्य कहते है चार-2 शादी करने के लिये पचंयाती राज्य है नां। जो जिसके मन मे आता है वो कहते रहते है। यह कोई सावरन्टी नही है। इनको किंगडम नही कहा जावेगा। किंगडम थी! कितना बल था। अब फिर तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। विश्व का मालिक बन जाओगें। यहाँ तो तुम आये ही हो विश्व का मालिक बनने। हेवनली गाड फादर जिनको शिव कहा जाता है। वो तुमको पढाते है। बच्चो मे कितना नशा रहना चाहिये। बहुत इज़ी नालेज है। तुम्हारा [illegible]

रहती है कि यह कोई ब्राह्मणी थोडेई है। यह क्या जानती है। बस। दुसरे दिन फिर आँनी भी नही। ऐसी आदत पडी हुई है जिसकारणही डिससर्विस भी होतीहै। नालेज तो वडी इजी है। कुमारियों को तो कोई धन्धा आद भी नही है। इनसे पुछा जाता है वो पढाई अच्छी वां यह पढाई अच्छी है? तो कहती है यह तो बहुत अच्छी है। बाबा अभी हम तो वो पढाई नही पढ़ेंगें। दिल नही लगता है। लौकिक बाप झौन मे नही होगा तो खावेंगी मार। फिर कोई बच्चियाँ कमजोर भी होती है। समझना चाहिये नाँ अरे:- इस पढाई से हम महाराजा बनुगी। उस पढाई से क्या हम पाई पैंसे की टोकरी करेंगे। यह पढाई तो हमको 21 जन्मो के लिये स्वर्ग का मालिक बनाती है। प्रजा भी स्वर्गवासी तो बनती है नाँ। अभी है नर्कवासी। यह है ही वैशाल्य। वैशाल्य अक्षर खराब है। अब बाप कहते है तुम सर्वगुण सम्पन्न... थे। अब तुम्ही कितने तमोप्रधान बन गये हो। सीढी उतरते आये हो। भारत जो सोने की सोने की चिडया कहलाता था। अभी तो वो ठिक्कर की भी नही है। भारत 100%सालवन्ट था। अब 100% इनसालवन्ट है। तुम जानते हो हम विश्व के मालिकपारस नाथ थे। फिर 84पूरे जन्म लेते-2 अभी पत्थरनाथ बन गये हो। हैं तो मनुष्य ही परन्तु पारनाथ और पत्थरनाथ कहा जाता है। गीत भी सुना अपने अन्दर को देखो हम कहाँ तक लायक है। भारत का भी मिसाल है नाँ। बाप समझाते है यह सब बन्दर सम्प्रदाय है। सभी मे पाँच विकार है। भ्रष्टाचार से पैदा होते है। सन्यासी भी पुर्नजन्म तो विकार से ही लेते है नाँ। फिर संस्कारो अनुसार चले जाते है। पुर्नजन्म तो सभी लेते है। पहेल नम्बर का शंकराचार्य भी पुर्नजन्म लेते-2 इस समय तमोप्रधान बना हुआ है। जैसे यह लक्ष्मी नारायण सतोप्रधान थे अब पुर्नजन्म लेते-2 तमोप्रधान है। देवी देवता कहलाते भी लज्जा आती है। मुर्ख क्योकि पतित है। ~~ ... देते है। और फिर ... सन्यासी लोग अपने को शिवोअहम् कह देते है~~ वैसे यह भारतवासी भी समझते है हमबहुत श्रेष्ठ है। श्री-2 का टाईटल देते रहते है। श्री जाकिर हुसैन। जो भी जिस धर्म का होगा उनको श्री कह देंगें। जैसे गवर्मेन्ट ओती है वो अपना ही सब चलाती है। भाषा आद सब बदल लेते है। अभी तो देखो किलो मीटर आद क्या-2 निकाले है। फिर नेय सिर सब कुछ सीखना पड़ता है। दिल प्रति दिन गिरते ही जाते है। गिरते-2 एकदम भक्ति मार्ग के दुबन मे गले तक फंसे पड़े है। अब तुम ब्राह्मण सभी को चोटी से पकड़ कर दुबनसे बाहर निकालते है। और कोई पकड़ने की जगह तो है नही। तो चोटी से पकडना सहज होता है। दुबन से निकालने लिये चोटी से पकडना होता है। दुबन मे तो ऐसे फंसे पड़े हुयेहै कि जो बात ही मत पुछो। भक्ति का राज्य है नाँ। अभी तुम कहते हो बाबा हम कल्प पहले भी आपके पास आये थे। राज्यभाग पाने। लक्ष्मी नारायण के मन्दिर तो बहुत बनाते रहते है। परन्तु उनको यह पता नही है कि यह विश्व के मालिक कैसे बने। अभी तुम कितने समझदार बने हो! तुम जानते हो उन्होने यह राज्यभाग कैसे पाया। फिर 84जन्म कैसे लिये। बिडला के कितने मन्दिर बनाये हुये है जैसे गुडियाँ बना लेते है। वो छोटी-2 यह यह बडी गुडियाँ बनाते है। चित्र बना कर पुजा आद करना उनका अक्युपेशन नही जानना तो गुडियों की ही पुजा हुई नाँ। अभी तुम जानते हो बाप ने हमको कितना शाहुकार बनाया था। अब कितने कंगाल बन गये है। जो पुज्य थे सो ही पुजारी बन गये है। भक्त लोग फिर भगवान के लिये कह देते है कि आप ही पुज्य आप ही पुजारी। आपही सुख देते हो आपही दुख देते हो। सब कुछ आपही करते हो। बस इसमे मस्त हो जाते है। कहते है आत्मा निर्लेप है। कुछ भी खाओं पीओं मौज करो। शरीर को लेप छेप लगता है। वो गंगा स्नान से शुध हो जावेगा। जो चाहिये सो ही खाओं। क्या-2 फैशन है। बस जिसने जो रिवाज डाला वो ही चल उठता है। आगे मनुष्यों को आदम खोर कहते थे। मनुष्यों की भी देवी पर बलि चढाते थे। मनुष्यों की मति तो देखो कैसी हो गई है। अब बाप बैठ समझाते है कि वैशाल्य से बचाकर लो शिवाल्य मे। सतयुग को क्षीर सागर कहा जाता है। यह है विषय सागर। तुम जानते

25-5-67

जाता है कि मनुष्य सहज रीती से समझें। सीढी में पुरे 84 जन्मो का वर्णन है। इतनी सहज बात भी किसको समझा नही सकते। बाबा समझेंगे कि पुरा पढते नही है। दुर्गति में ही रखा है! विष्टा के कीडे होते है नां। तुम हो भ्रमरी, कीडो को भूं-2 करके आप समान बनाते हो। यह भ्रमरी अथवा सर्प आद का मिसाल सन्यासी लोग समझा नही सकते। यह तो बाप तुम बच्चो को समझाते है। जैसे सर्प पुरानी खल छोडकर नई ले लेते है। तुम भी जानते हो कि यह पुराना सडा हुआ शरीर है। इसको छोडना है। यह दुनियां भी पुरानी है। शरीर भी पुराना है। यह छोड कर अब नई दुनियां में जाना है। तुम्हारी यह पढाई है ही नई दुनियां स्वर्ग के लिये। अब यह पुरानी दुनियां तो खलास हो जानी है। सागर की एक ही लहर से सारा डांवाडोल हो जावेगा। पानीमुख मे पड गया तो लो यह मरा। विनाश होना ही है नां। नैचरल कलैमिटीज तो किनको भी छोडती नही है। आगे चल कर विनाश सा0 करेंगे। भविष्य मे हम क्या जाकर बनेंगे वो भी देखेंगे। परिक्षा मे नापास होते है तो फिर बहुत पछताते है। तुम भी समझेंगे कि बाबा ने हमको कितना समझाया फिक पढो समय वेस्ट नही करो। यह सारा मोस्ट वैल्युबल समय है। बाप तो बहुत सहज समझाते है। मुझे याद करो तो पाप नष्ट हो जावेंगे। एवर हैल्दी बन जावेंगे। शान्ति धाम मे जाकर फिर सुख धाम मे आ जावेंगे। आत्मा को सा0 हुआ है 84 जन्मो का। बाबा की शंखध्वनी से तुम भी शंखध्वनी करती हो। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। परन्तु अलंकार तुमको शोभेंगे नही। इसलिये ही विष्णु को देते है। जो अच्छी रीती पढेंगे वो ही ऊंच पद पद्मपद पावेंगे। यह लन अबसोल्युट है। बाकी विष्णु कुछ है थोडेई। बाप बैठ समझाते है भक्ति मार्ग में सब अनशोप्स ढंग मिल है। [illegible] उनकी जागोग्राफी को नही जानते है। ल-न का चित्र बिलकुल राईट है। उनका राज्य था। चतुर्भुज का राज्य तो नही कहेंगे। कथा भी सत्यनारायण की ही कहते है। तुम भी अभी सच्ची-2 कथा सुन रही रहेहो। यह एक ही कथा है नर से नारायण बनने की। वो झूठी कथाये तो जन्मजन्मान्तर सुनते और गिरते ही आये है। तुम जानते हो विनाश होना ही है। इसलिये फिर भक्ति मार्ग में कुम्भ दशहरा बनाते है। अभी तुम संगम पर हो। स्वर्ग की राजाई भी देखते हो। विनाश भी देखते हो। बच्चो को राजाई मिलती है बाप दवारा। उनका जब राज्य था तो और कोई धर्म नही था। इन ल-न का भारत मे राज्य था। आदी सनातन देवी देवता धर्म के बदले हिन्दु धर्म कह देते है। बाप कहते है कि कितेन आडियट बन गये है। अभी मै इनमे प्रवेश कर तुमको सिखा रहा हूं। यह भी सीखते जाते है। तुमको सिखा रहा हूं मैं भी सीखता है। बाकी कोई घोडे गाडी आद की बात नही है। भूल कितनी नाजुक कर दी है। ब्रहमा सो नारायण बनते है। ब्रहमा सो विष्णु युगल। विष्णु युगल सो ल-न युगल। ब्रहमा सरस्वती के साथ दिखाते है। बाकी युगल मनुष्य कोई होते नही है। चार भुजा वाले। वां चतर्भुज होते है। मनुष्य तो मनुष्य ही होते है। और मनुष्य भी यहां पर ही होते है। वो कोई सूक्ष्म वतन मे नही होते है। विष्णु भी यहां ही चाहिये। बाकी तो सब भक्ति मार्ग के चित्र है। बाप कहते है इन सबको भूल जाना है। कोई चित्र को याद नही करना है। सिर्फ एक बाप को ही याद करना है। बाकी सबको भूल जाना है। अपने पास डायरी रखो। सारे दिन भर मे हमेन कोई पाप तो नही किया? कोई को दुःख तो नही दिया? बाप को कितना याद किया? जितना याद करेंगे उतने पाप कटेंगे। बाप कहते है अपना मुखडा देखो। सारे दिन मे बाप कितना याद किया? कितेन अन्धों की लाठी बने? फिर ऐसा कोई नही कहने पाये कि हमको बं पैगाम थोडेई मिला जो कि हम बाप को याद करते। तुम बच्चो को तो सबको पैगाम देना है। बाप कहते है मौत सामने ही खडा है। नैचरल कलैमिटीज मे भी कितना नुकसान होता है। कब्स मे भी

तो ऐसी है जो याद मे [illegible] देती है। [illegible]